घाटी में रक्षक बन उतरे पैरा कमांडो

खतरनाक अभियान में माहिर हैं सेना की स्पेशल फोर्स के पैरा जवान

अमर उजाला ब्यूरो

- पांच पर भारी है पैराशूट रेजिमेंट का एक जवान
- केदारघाटी के बचाव अभियान में दो सौ उतरे
- 48 घंटे में एक हजार को सुरक्षित खोज निकाला

देहरादून। दुश्मन के खिलाफ खतरनाक मिशन पर जाने वाले सेना की पैराशूट रेजिमेंट (स्पेशल फोर्स) के पैरा कमांडो केदारघाटी में देवदूत बनकर आसमान से उतरे हैं। लगभग दो सौ जवान 'बडी पेयर' (दो कमांडो की एक टीम) बनाकर पूरी घाटी में छा गए। जवानों ने अपने युद्धकौशल की कला और जाबांजी की दम पर बेहद दुर्गम केदारघाटी से एक हजार से अधिक श्रद्धालुओं को खोज लिया।

सीने पर पैराशूट के पंख वाला बैज और सिर पर लाल बैरे (कैप) पहने यह कमांडो सेना की स्पेशल फोर्स यूनिट का हिस्सा हैं। इस फोर्स ने सैन्य युद्ध इतिहास में अनगिनत आपरेशनों को सफलता पूर्वक अंजाम दिया है। केदार घाटी में तबाही का जायजा लेने के बाद सेना को जब गहरी कंदराओं और घाटियों में घुसने में दिक्कत हुई तो आला सैन्य अफसरों ने घाटी में कमांडोज को उतारने का फैसला लिया।

20 जून को वायुसेना और सेना के हेलीकाप्टरों और विमानों से पैरा कमांडोज का पहला दस्ता घाटी में उतरा। नतीजे चौंकाने वाले रहे, कमांडोज ने कई जगहों पर यात्रियों के फंसे होने की सूचना दी। 22 जून की शाम तक इनकी मदद से लगभग एक हजार तीर्थयात्रियों को कई घाटियों से ढूंढ निकाला गया। उत्तर भारत एरिया कमांर लेफ्टिनेंट एनएस बाबा के मुताबिक स्पेशल फोर्स का एक जवान पांच लोगों के बराबर है। बेहद कठिन प्रशिक्षण से निकले यह दस्ते मुश्किल से मुश्किल मिशन को सफलता से अंजाम देते हैं।

कौशल के आगे 'झुकी' पहाड़ियां

पैरा दस्तों की चुनौती घाटियों में उतर कर फंसे लोगों को तलाशने भर तक नहीं रही। जब फंसे लोगों को निकालने में हेलीकाप्टर कामयाब नहीं हो रहे थे। ऐसे में जवानों ने कई यात्रियों को अपनी पीठ पर रस्सियों से बांध कर 90 डिग्री कोण वाली पथरीली पहाड़ियों से पार कराया।

युद्ध कौशल में माहिर है रेजिमेंट

पैरा रेजिमेंट अलग-अलग युद्ध कौशल में माहिर हैं। एंटी हाईजैकिंग, हाई एल्टीट्यूड वारफेयर और माउंटेनरिंग, रेगिस्तान में आपरेशन करने के अलावा घने जंगलों और गहरे पानी में किसी भी मिशन को सफलता से अंजाम देने के लिए ट्रेंड हैं। इनके पास सामान्य सैनिकों से इतर हल्के लेकिन आधुनिक हथियार होते हैं।